

विचार बिन्दु

रोगियों के लिए भलीभांति सोचकर निश्चित की गयी औषधि नाम उच्चारण करने मात्र से किसी को निरोगी नहीं कर सकती। -हितोपदेश

बढ़ती जनसंख्या भारत के विकास की सबसे बड़ी चुनौती

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष ने हाल ही में विश्व जनसंख्या स्थिति रिपोर्ट 2023 जारी की है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत वर्ष 2023 के मध्य तक विश्व का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन जाएगा और भारत की जनसंख्या चीन से भी अधिक हो जाएगी। अर्थात् 2023 तक चीन की 142.57 करोड़ जनसंख्या की तुलना में भारत की जनसंख्या 142.86 करोड़ तक पहुंचने का अनुमान है। संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि अगर आबादी इसी रफ्तार से बढ़ती रही 2060 के दशक की शुरुआत में भारत की जनसंख्या लगभग 170 करोड़ तक पहुंच जाएगी। हालांकि संयुक्त राष्ट्र ने यह भी कहा है कि इसके बाद जनसंख्या में गिरावट आने लगेगी और आबादी में 12 प्रतिशत की गिरावट आने का अनुमान है। लेकिन गिरावट के बाद भी भारत पूरी सदी में दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बना रहेगा। जनसंख्या वृद्धि आज एक वैश्विक समस्या बन चुकी है। जनसंख्या विस्फोट ने न केवल विकास को प्रभावित किया है अपितु इससे बेरोजगारी, भुखमरी और अशिक्षा जैसी भयावह समस्याओं ने विकराल रूप ले लिया है। ऐसे में जनसंख्या नियंत्रण एक जरूरी कदम हो जाता है। भारत में जनसंख्या विस्फोट का असर अब दिखाई देने लगा है। हमारी सुविधाएँ सिकुड़ने लगी हैं और दैनंदिन जीवन मुश्किल में पड़ने लगा है। भारत की राजधानी जनसंख्या विस्फोट से उबलने लगी है। देश के मेट्रो शहरों का हाल भी बहुत खराब है। बड़े और छोटे शहरों में आये दिन लगने वाले ट्रैफिक जाम ने जीना हराम कर दिया है। वाहन रेंने की स्थिति में पहुँच गए हैं। लोगों को पैदल चलना अधिक मुनासिब लग रहा है। बढ़ती जनसंख्या की दुश्वारियाँ सिर चढ़कर बोलने लगी हैं। भूखों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। विकास कार्य सिकुड़ रहे हैं। रोटी, कपड़ा और मकान की बुनियादी सुविधाओं की बात करना बेमानी हो गया है। विकास का स्थान विनाश ने ले लिया है। भारत की सबसे बड़ी समस्या है जनसंख्या विस्फोट। तेजी बढ़ती हुई जनसंख्या ने देश के समक्ष अनेक विकराल समस्याएँ खड़ी कर दी हैं, जिनका सामाधान तब तक सम्भव नहीं जब तक जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश न लगा दिया जाए। यदि जनसंख्या वृद्धि की इस दर को रोकना न गया तो भीषण परिणाम भुगतने पड़ेगे। तीव्र गति से बढ़ती हुई इस जनसंख्या के लिए भोजन, वस्त्र और आवास जैसी सुविधाओं को जुटा पाना भारत जैसे सीमित साधनों वाले देश के लिए सम्भव नहीं है।

आज दुनिया की एक बड़ी आबादी भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास समेत बुनियादी सुविधाओं से वंचित है और इसकी एक प्रमुख वजह अनियंत्रित आबादी है। जनसंख्या वृद्धि भारत सहित दुनिया के कई देशों विशेषकर विकासशील देशों में गंभीर समस्या का रूप ले चुकी है। देश और दुनिया में लगातार बढ़ती जनसंख्या ने विकास के सारे मार्ग अवरुद्ध कर दिए हैं। कोई ठोस वैश्विक नीति नहीं होने का खामियाजा हर व्यक्ति को उठाना पड़ रहा है। ऐसे

में समूचे विश्व का ध्यान भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर केंद्रित हो रहा है जो अपने कठोर फैसलों के लिए जाने जाते हैं। मोदी इस समय एक ग्लोबल लीडर के रूप में स्थापित हो चुके हैं। जनसंख्या विशेषज्ञों का मानना है यदि भारत में कानून के जरिये बढ़ती जनसंख्या पर लगाम लगाई जाती है तो दुनिया भारत का अनुसरण कर सकती है। भारत में मोदी सरकार के लिए जनसंख्या कानून बनाने का यह सही समय है। देश के विकास को पटरी पर लाने और खुशहाल भारत के सपने को साकार करने के लिए देश में जनसंख्या कानून को अमली जामा पहनने की आज महती जरूरत है। एक या दो बच्चों के आदर्श परिवार को अपनाकर ही हम देश की विभिन्न ज्वलंत समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

इसके लिए लोगों को जागरूक और शिक्षित कर अपने भले बुरे का ज्ञान करना जरूरी है तभी हम अपने उद्देश्य में सफल हो सकते हैं।

भारत विश्व का दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है। आजादी के समय भारत की जनसंख्या 33 करोड़ थी जो आज चार गुना तक बढ़ गयी है। 2011 की जनगणना के आंकड़ों के मुताबिक भारत की जनसंख्या 121 करोड़ है। जबकि जनसंख्या वृद्धि दर संबंधी आंकड़ों पर नजर रखने वाली वेबसाइट वर्ल्डमीटर के अनुसार 2021 में भारत की जनसंख्या लगभग 139 करोड़ हो चुकी है। परिवार नियोजन के कमजोर तरीकों, अशिक्षा, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के अभाव, अंधविश्वास और विकासवात्मक असंतुलन के चलते आबादी तेजी से बढ़ी है।

हमारी आबादी में अभी भी हर दिन पचास हजार की वृद्धि हो रही है। इतनी बड़ी जनसंख्या को भोजन मुहैया कराने के लिए यह आवश्यक है कि हमारा खाद्यान्न उत्पादन प्रतिवर्ष 54 लाख टन से बड़े जबकि वह औसतन केवल 40 लाख टन प्रतिवर्ष की दर से ही बढ़ पाता है। जनसंख्या वृद्धि के दो मूल कारण अशिक्षा एवं गरीबी हैं। लगातार बढ़ती आबादी के चलते बड़े पैमाने पर बेरोजगारी तो पैदा हो ही रही है, कई तरह की अन्य आर्थिक और सामाजिक समस्याएँ भी पैदा हो रही हैं। भारत के सामने अनेक समस्याएँ चुनौती बनकर खड़ी हैं। जनसंख्या-विस्फोट उनमें से सर्वाधिक है। एक अरब भारतीयों के पास धरती, खनिज, साधन आज भी वही हैं जो 50 साल पहले थे परिणामस्वरूप लोगों के पास जमीन कम, आय कम और समस्याएँ अधिक बढ़ती जा रही हैं।

जनसंख्या वृद्धि एक नयी चुनौती बनकर हमारे सामने आई है और आज भी इस पर काबू पाने में सरकार को कठिनाई हो रही है। जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणाम देश को भोगने पड़ रहे हैं। बढ़ती जनसंख्या की दुश्वारियाँ सिर चढ़कर बोलने लगी हैं। भूखों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। विकास कार्य सिकुड़ रहे हैं। रोटी, कपड़ा और मकान की बुनियादी सुविधाओं की बात करना बेमानी हो गया है।

विकास का स्थान विनाश ने ले लिया है। अधिक जनसंख्या के कारण बेरोजगारी की विकराल समस्या उत्पन्न हो गयी है। लोगों के आवास के लिए कृषि योग्य भूमि और जंगलों को उजाड़ा जा रहा है। इससे बचने का एक मात्र उपाय यही है की हम येन केन प्रकारेण बढ़ती आबादी को रोके। अन्यथा विकास का स्थान विनाश को लेते अधिक देर नहीं लगेगी।

-अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

कांवड़ यात्रा में पहचान का सुप्रीम संकट



प्रो. वीर बहादुर सिंह

पृथ्वी पर ऐसी कोई वस्तु, वनस्पति, जीव, प्राणी, जीवाणु, विषाणु, पक्षी, पहाड़, नदियाँ, नहरें, बाग, सड़क, शहर, गांव यहाँ तक कि जीव-जंतुओं, पशुओं और प्राणीओं के मूल मूल, इमारतें, कामज, कोंपि, कित्ताव, इत्यादि किसी पर गौर करिये, सब का नाम होता है। नाम पहचान का मुख्य संकेत अथवा द्योतक है। वैज्ञानिकों ने पेड़ पौधों के कोर्टेनिकल नाम और जीवित प्राणिओं के जूलॉजिकल नाम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर रख दिए हैं। श्री कृष्ण ने तो सैकड़ों गावों के नाम रख लिए थे और उसी नाम से उन्हें बुलाते थे। पहचान का सिलसिला किसी चीज के आरम्भ होते ही शुरू हो जाता है। मनुष्यों में बच्चा जन्म लेने के उपरांत उसका पहला संस्कार नाम करण ही होता है। वहीं से मनुष्य की पहचान शुरू हो जाती है जो जीवन पर्यन्त और

मरणोपरांत भी उपयोग में आती है, उस प्राणी के लिए फिर स्वर्गीय लिखा या बोला जाता है। कहने का तात्पर्य है कि एक बार पहचान बनने पर फिर ताउम्र वही बनी रहती है और उसके साथ जन्म दिन भी। फिर चाहे कोई आधार कार्ड बनवाए, अथवा अन्य कोई और कार्य यथा बैंक अकाउंट, मकान, प्रॉपर्टी, शिक्षा इत्यादि एक बार बनी पहचान सदैव काम आती है। अब जरा गौर करिये यदि ऐसी पहचान न होती, तो क्या होता? सभी आदमी बिना नाम के, सभी औरतें बिना नाम की, सभी शहर, सड़क, गली-मोहल्ला, बाजार, ऑफिस यहाँ तक न्यायलय भी, पोस्ट ऑफिस, बैंक इत्यादि मेरे विचार से सब कुछ अस्तव्यस्त रहता। कोई नियम कानून काम नहीं करते। अव्यवस्था का आलम ही सब जगह दुष्टिगोचर होता। दिल्ली जाने वाले जयपुर लखनऊ और न जाने किस जगह पहुँच जाते क्योंकि किसी स्थान का नाम ही नहीं होता।

अब देखते हैं कि अभी हो क्या रहा है? शहरों में सड़कों के नाम, गलियों के नाम, बाजारों के नाम, दुकानों के नाम, दुकान मालिक का नाम और मोबाइल नंबर, साथ में क्या वस्तुएँ वहाँ बिकती हैं उनका नाम, होज़री, कांच, प्लास्टिक, फेब्रिक, रेडीमेड गारमेंट्स, शूज, टेलर, आदि सभी लोग नाम लिखते हैं ताकि विकास को सुविधा रहे, पहचान में दिक्कत नहीं आये। सभी सरकारी

कार्यालयों, बैंकों और सभी स्कूल व अन्य शैक्षिक संस्थान, बिना नाम के कोई नहीं मिलेगा। पुलिस और सभी फौजी अफसर अपने नाम की पीतल या प्लास्टिक की नाम प्लेट ड्रेस में जेब पर लगाते हैं चाहे वे किसी धर्म, जाति के हों। इस पृथ्वी पर पहचान इसलिए बहुत महत्वपूर्ण है और पहचान के लिए नाम। उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरयाणा, उत्तराखंड, बिहार आदि अनेक जगहों से ग्रामीण कांवड़ लेकर गंगा जी तक पैदल यात्रा करते हैं, मजे की बात ये है कि वे कांवड़ को जमीं पर नहीं रखते। लौटती बार उन्हें कलशों में गंगा जल भर कर वापिस लौटते हैं। यह काम कांवड़िये बहुत पवित्रता और आत्मियता से करते हैं। इस यात्रा में शुद्धता का बहुत ख्याल रखा जाता है। मैं अपनी शिक्षा काल में लगभग 7 वर्ष (1951 से 1958) एला शहर उत्तर प्रदेश में रहा, वहाँ मैंने जीवन में पहली बार कांवड़ देखी जो जीटी रोड से कासगंज होते हुए सोरो या अन्य किसी धार्मिक तीर्थ तक ले जाई जाती है। इसलिए मुझे पता है कि इस ईश्वरीय प्रेरणा और लगन से ग्रामीण कांवड़ ले जाते हैं। उसकी तह में जाने पर ही मालूम होता है कि ग्रामीण किस निष्ठा और सात्विक भावना से यह कार्य संपन्न करते हैं। वेशभूषा से कांवड़िए गरीब ही लगते हैं लेकिन धार्मिक जज्बा उनमें चरम पर होता है। पहले प्रशासन कभी भी उन्हें नियंत्रित नहीं करता था,

जब से राजनितिक लोगों का नैतिक पतन हो गया है उपरवी उक्त यात्रा में विघ्न उत्पन्न करने का प्रयास करने लगे हैं। ये भूमिलता या विकृति समाज में मुसलमानों में अशिक्षा के कारण हिंदू दोगलों ने अपनी राजनैतिक रीढ़ियाँ सेकने के लिए उन्हें सनातनियों के विरुद्ध भड़का दिया है। ऐसी स्थिति से निबटने के लिए योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री जो एक मठ के साधु भी हैं, इस स्थिति को भांपने में कहीं चूक रही करते और सभी ऐतिहासिक कदम पहले से उठा लेते हैं। एक अनुभववी मुख्य मंत्री में यह गुण तो आवश्यक है।

मैंने सुना है कि पार्टी हाई कमान उनसे नाराज़ है और उन्हें पद से च्युत करने की फिराक में है। मोदी जी का ग्राफ लोकसभा चुनाव में ही पहले नीचे आ चुका है। रही-सही कसर प्रदेश में योगी जी को हटाने से पूरी हो जाएगी। 2029 अभी बहुत दूर है अभी बजट से भी मध्यम वर्ग त्रस्त है। मेरा मानना है कि मोदी जी को अपनी सोच और कार्य शैली में बदलाव करना चाहिए तो उनकी अंतर देशीय लोकप्रियता बनी रह सकती है, बाकी मुझे संशय है कि वे पुनः लौट सकेंगे? मैं स्वयं पूर्व में उनकी पार्टी का पक्षधर रहा हूँ। उन्हें योगी जी को अपना भरपूर समर्थन देना चाहिए। मेरा मानना है कि योगी जी समय से पूर्व मोदी जी के लिए कोई अवरोध उत्पन्न नहीं करेंगे यह विशेषता उनके खून में

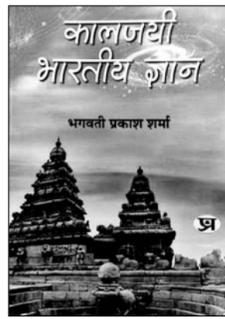
पुस्तक समीक्षा : “कालजयी भारतीय ज्ञान” प्राचीन ग्रंथ व वेद तथ्यपरक व विज्ञान आधारित

लेखक भगवती प्रकाश शर्मा ने अपनी पुस्तक कालजयी भारतीय ज्ञान में इन तार्किक जानकारीयों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है। भारतीय संस्कृति अनुपम है और पूरी दुनिया में सबसे विशिष्ट होने के कारण सर्वस्वीकार्य भी है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में लिख गये तथ्य आज के समय में भी प्रामाणिक व व्यावहारिक सिद्ध हो रहे हैं। वेदों, पुराणों, ब्राह्मण ग्रंथों, उपनिषदों, आरण्यकों, रामायण, महाभारत एवं प्राचीन सनातन हिंदू ग्रंथों में उन्नत आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के संदर्भ को विवेचित किया गया है वे हमारे जीवन दर्शन और विचारों में परिलक्षित होते हैं। भारतीय ज्ञान-परम्परा व चिंतन का एकमेव ध्येय ही विश्वमंगल है। प्राचीन भारतीय ज्ञान कोई धर्म सापेक्ष कर्मकांड न होकर सार्वभौम मानवोपयोगी ज्ञान की निधि है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम व ज्ञानप्रधान संस्कृति है। यूनेस्को ने ऋग्वेद की 3800 वर्ष प्राचीन 3, पांडुलिपियों को विश्व विरासत में सम्मिलित करते हुए माना कि ऐसी सुदीर्घ, अधुणुण व पुरातन पांडुलिपियाँ विश्व में अन्यत्र दुर्लभ हैं। ज्ञान प्रधानता के संबंध में अमेरिकी इतिहासविद मार्क ट्वेन के अनुसार

आज के आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की भी कई जानकारीयें प्राचीन भारतीय हिंदू वाङ्मय में पहले से मिल जाती हैं और यह भी संभव है कि भविष्य में होने वाले नवीन अन्वेषणों व आविष्कारों के भी कई संदर्भ प्राचीन भारतीय शास्त्रों में मिल जाए। इन तार्किक जानकारीयों को सरल भाषा में लेखक भगवती प्रकाश शर्मा ने अपनी पुस्तक “कालजयी भारतीय ज्ञान” में प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में भारतवर्ष के समृद्ध, समुन्नत, सर्वमान्य ज्ञान परम्परा का एक वृहद व व्यावहारिक विश्वकोश सम्मिलित किया गया है। ब्रह्मांड में सम्पूर्ण खाली स्थान में वैज्ञानिकों के अनुसार एक आश्चर्यजनक ऊर्जा विद्यमान है, जिसे खगोल वैज्ञानिक डार्क एनर्जी कहते हैं। वर्ष 1998 के बाद पता चला कि इस डार्क एनर्जी को ब्रह्मांड का विस्तार का कारण जाना जा रहा है। ब्रह्मांड में विद्यमान 2,8 खरब आकाश गंगाओं व उनके मध्य के डार्क मैटर का समग्र अंश 26 प्रतिशत माना जाता है। ऐसा कहा जा सकता है कि ब्रह्मांड में सम्पूर्ण दृश्य भाग या पदार्थ एक चौथाई अंश है व तीन चौथाई अंश अदृश्य डार्क मैटर का है इन तथ्यों को वेदों में भी इसी रूप में विवेचित किया है।

पुस्तक में ब्रह्मांड की श्याम ऊर्जा, ब्रह्मांड की उत्पत्ति का वैज्ञानिक विमर्श, सौर मंडल रहस्य, गुरुत्वाकर्षण का प्राचीन वैदिक व अन्य शास्त्रों का संदर्भ प्रमाण, प्रकाश की गति का वैदिक विमर्श, ग्रहण का वैज्ञानिक विवेचन आदि की शस्त्रोक्त व्याख्या की गई है। शर्मा ने वेदों में लोकतंत्र, गणराज्य एवं राष्ट्र की प्राचीन संकल्पना, राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव का वैदिक विमर्श, राजपद व उसकी मर्यादाएँ, उद्योग, व्यापार व वाणिज्य लोक वित्त के प्राचीन संदर्भ आदि को सतर्क प्रस्तुत किया है। उन्नत शब्द विज्ञान, उन्नत भौतिकीय, रासायनिक व गणितीय ज्ञान के संदर्भों, वैदिक सूर्योपासना के वैश्विक प्रसार और अमेरिकी पुरावशेषों पर भारतीय संस्कृतिक प्रभाव के संदर्भों का भी



विवेचन किया गया है। पुस्तक में दिये गये तर्कों के आधार पर प्राचीन भारतीय ज्ञान-परम्परा सार्वभौम मानव कल्याण व सम्पूर्ण प्रकृति के संरक्षण व संवर्द्धन पर केन्द्रित है। उन्नत ज्ञान की दृष्टि से इसमें आधुनिक खगोल शास्त्र, सौरमंडल, अंतरिक्ष विज्ञान व भू-विज्ञान सहित ब्रह्मांड रचना संबंधी अनेक आधुनिक जानकारीयें प्रचुरता में मिल जाती हैं। शरीर रचना, स्वास्थ्य विज्ञान और गणित सहित भौतिक विज्ञान के भी अनेक तथ्य आज वेद, वेदांग आरण्यक, उपनिषद, ब्राह्मण, साहित्य, सूत्र, संहिताओं व अन्य संस्कृत ग्रंथों में प्रचुरता से मिल रहे हैं। अर्थशास्त्र व नागरिक शास्त्र सहित विविध सामाजिक विज्ञानों के साथ ही आधुनिक प्रौद्योगिकी एवं व्यापार-वाणिज्य के उन्नत सिद्धांत भी प्राचीन शास्त्रों में मिलते हैं। वेदों में प्रकाश की गति से लेकर हृदय के विद्युत स्पंदनों तक का ज्ञान और ब्रह्मांड की श्याम ऊर्जा से लेकर पाई के सूक्ष्म मान तक के अनागत सूत्र हैं। धातु विज्ञान से विमान शास्त्र तक के अनेक उन्नत विषय उनमें हैं। पृथ्वी की धुरी के स्पंदन से लेकर हृदयगत स्मृति जैसे सभी विषय अत्यन्त महत्व के हैं।

सूर्य न अस्त होता है न उदय-ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा है कि अंतरिक्ष में सूर्य कभी न उदित होता है न अस्त ही होता है। सूर्य जब भूमंडल के एक भाग को प्रकाश युक्त करता है तब दूसरे भाग का उसके सम्मुख होने पर वह उस दूसरे भाग को प्रकाशित करता है और घूमकर उदती और जा कुछे भाग में अंधकार होने से वहाँ रात्रि होती है। राजा या राष्ट्र प्रमुख की मातृभूमि पर सर्वस्व अर्पण शपथ में अपनी मातृभूमि व उसके दुःख व कष्टों से मुक्ति के लिए स्वयं सब प्रकार के कष्ट सहने को तत्पर हैं। वे कष्ट कैसे भी, कहीं से आवें और कब आवें, मुझे इसकी कोई चिंता या भय नहीं है। युजर्वेद में राष्ट्र की व्याख्या-ऐसा जन-समूह जो एक सुनिश्चित भूमिखंड में रहता है, संसार में व्याप व इसे चलाते वाले परमात्मा अथवा प्रकृति के अस्तित्व को स्वीकार करता है, बुद्धि को प्राथमिकता देता है और विद्वज्जनों का आदर करता है तथा जिसके पास अपने देश को बाहरी आक्रमण और आंतरिक, प्राकृतिक आपत्तियों से बचाने एवं सभी के योगक्षेम की क्षमता हो, वह एक राष्ट्र है। चारों वर्णों से युक्त मंत्रिमंडल-महाभारत सहित कई ग्रंथों में मंत्रिमंडल में चारो वर्णों के समावेश को आवश्यक बतलाया है। महाभारत शांति पर्व में 37 स्वदेशीय मंत्रिमंडल में 3 शूद्र व 1 सूत आवश्यक बतलाए हैं।

चिकित्सक शिक्षकों ने हॉस्पिटल परिसर के बाहर पकौड़े तले

भीलवाड़ा, (निसं)। राजमेश मेडिकल कॉलेज के चिकित्सक शिक्षकों ने हड़ताल के पांचवें दिन शुक्रवार को सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए एमजी हॉस्पिटल परिसर के बाहर पकौड़े तले। इस बीच, हड़ताली डॉक्टरों ने सोमवार को आंदोलन को और उग्र करने की चेतावनी दी है।

डॉक्टर चेतन कुमार ने कहा कि शिक्षक चिकित्सकों की हड़ताल का आज पांचवां दिन है, लेकिन सरकार की ओर से अब तक कोई सुनवाई नहीं हुई। हड़ताली चिकित्सकों ने जयपुर कूच कर हैडक्वार्टर्स के बाहर भी सरकार के अगेंस्ट प्रदर्शन किया था। कल चिकित्सकों ने हवन करके, जबकि आज पकौड़े तलकर सरकार को अपना दुःख व्यक्त किया कि, अगर सरकार ने मांगें नहीं मानी तो डॉक्टरों पकौड़े तलने के लिए बाध्य हो जायेंगे। उन्होंने कहा कि कल डॉक्टरों क्रमिक अनशन करेंगे। डॉक्टर चेतन ने कहा कि जिला अस्पताल में जो भी डॉक्टरों काम कर रहे हैं, वो भी काली पट्टी बांधकर



राजमेश मेडिकल कॉलेज के चिकित्सक शिक्षकों ने सरकार का ध्यान आकर्षित करने के लिए एमजी हॉस्पिटल परिसर के बाहर पकौड़े तले।

दुःख व्यक्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हड़ताल से पहले अस्पताल में जहां 30-30 सर्जरी होती थी, वहां आज 8-10 सर्जरी हो रही है, इससे मरीजों को दिक्कतें आ रही हैं। डॉक्टरों ने कहा कि अगर सरकार ने हमारी मांगें नहीं मानी तो सोमवार से और उग्र आंदोलन किया जायेगा।

पाकिस्तान से भारत लौटे तीन भाई-बहन को बीस साल बाद भारत की नागरिकता मिली

अजमेर, (कासं)। पाकिस्तान से भारत लौटे तीन भाई-बहन को 20 साल बाद शुक्रवार को भारत की नागरिकता दी गई। अजमेर कलेक्ट्रेट स्थित एडीएम सिटी गजेंद्र सिंह राठौड़ ने भारत की नागरिकता का प्रमाण-पत्र तीनों को सौंपा। भारत की नागरिकता मिलने के बाद परिवार में खुशी का

माहौल है। एडीएम सिटी गजेंद्र सिंह राठौड़ ने बताया कि रमादेवी नाम की महिला जयपुर में रहती थी। उन्होंने पाकिस्तान में शहीदी की थी। पहले रमादेवी के पति हंसराज और उनके बड़े बेटे को भारत की नागरिकता दी जा चुकी है। शुक्रवार को उनके तीन

नागरिकता दी गई है। भारत की नागरिकता मिलने के बाद नीलकमल ने कहा- उसे नागरिकता मिलने के बाद काफी खुशी हो रही है। बहुत छोटी थी, तब पाकिस्तान से भारत आई थी। मेरी पढ़ाई-लिखाई भी यहीं पर पूरी हुई है। अब मुझे खुशी है कि मैं चोट दे पाऊंगी और भारत की

योजनाओं का लाभ उठा पाऊंगी। तीनों बच्चों की मां रमादेवी ने कहा कि बच्चों को नागरिकता मिलने के बाद काफी खुशी हो रही है। नागरिकता लेने के लिए 20 साल का इंतजार करना पड़ा। इसके बाद केंद्र सरकार ने इस शुभ मुहूर्त पर नागरिकता देकर तोहफा दिया है।



राशिफल शनिवार 27 जुलाई, 2024

सावन मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत् 2081, रेवती नक्षत्र दिन 1:00 तक, धृति योग रात्रि 10:44 तक, विष्टि करण दिन 10:25 तक, चन्द्रमा आज दिन 1:00 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-मीन, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरु-वृष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। विषयोग दिन 1:00 तक है। आज भद्रा दिन 10:25 तक रहेगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:33 से 9:13 तक, चर 12:33 से 2:13 तक, लाभ-अमृत 2:13 से 5:34 तक। राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:52, सूर्यास्त 7:14

मेष
घर-परिवार के खर्चों पर नियंत्रण करना ठीक रहेगा। अनावश्यक समय खराब हो सकता है। दिन के मध्याह्न परचात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगे।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं रहेगा। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकता है। दिन के मध्याह्न परचात अटके हुए कार्य बनने लगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।

धनु
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। दिन के मध्याह्न परचात मित्रो/रिश्तेदारों में समय खराब हो सकता है।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। दिन के मध्याह्न परचात चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बतते कार्य विगड़ सकते हैं।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक संर्भक बनने। व्यावसायिक वाता सफल रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगे। नौकरिपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। अटके हुए कार्य बनने लगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। दिन के मध्याह्न परचात परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। दिन के मध्याह्न परचात परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटके हुए कार्य बनने लगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

मीन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगे। दिन के मध्याह्न परचात घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। परिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।